बृज सूना सूना लागे रे

'बृज सूना सूना, लागे रे, गोपाल के बिना' ॥
*गोपाल के बिना, नन्दलाल के बिना ॥
बृज सूना ॥ सूना, लागे रे,,,,,,,,,,,,,,,,

शीकण पर, चढ़ चढ़ करके, माखन कौन चुराए रे,
कदम की डारन, झूले पड़े, पींघें कौन बढाए रे।
"गोपाल के बिना, नन्दलाल के बिना xll "
बृज सूना ॥ सूना, लागे रे,,,,,,,,,,,,,,,,

दिखला कर, सूरत मोहिनी, मन को कौन लुभाए रे,
गोपियन के संग, हस हस के, मोतिन कौन लुटाए रे।
"गोपाल के बिना, नन्दलाल के बिना xll "
बृज सूना ॥ सूना, लागे रे,,,,,,,,,,,,,,,,

रूठी, भवन में बैठी माँ, आ के कौन मनाए रे,
वहॉ आ के, सच्ची झूठी, बातन कौन बनाए रे।
"गोपाल के बिना, नन्दलाल के बिना xll "
बृज सूना ॥ सूना, लागे रे,,,,,,,,,,,,,,,,

पनघट पे, पनिहारन की, मटकिन कौन उठाए रे,
रच रच कर, सुँदर लीला, आनन्द कौन फैलाए रे।
"गोपाल के बिना, नन्दलाल के बिना xll "
बृज सूना ॥ सूना, लागे रे,,,,,,,,,,,,,,,,

वन उपवन और कुंजन में, गऊयन कौन चराए रे,
यमुना के, तट पे आकर, बँसी कौन बजाए रे।
"गोपाल के बिना, नन्दलाल के बिना xll "
बृज सूना ॥ सूना, लागे रे,,,,,,,,,,,,,,,,
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/19174/title/brij-soona-soona-lage-re

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |